प्रातः क्लास 19-6-68 ओमशान्ति पिताश्री अपन को आत्मा समझो।

ओमशान्ति। डबल ओमशान्ति भी कह सकते हैं। बच्चे भी जानते हैं और बाप दादा भी जानते हैं। ओमशान्ति का अर्थ ही है मैं आत्मा शान्त रूप हूं और बरोबर शान्ति के सागर, सुख के सागर, पवित्रता के सागर नम्बरवार भी कहना पड़ता है क्योंकि पहले2 है पवित्रता का सागर। पवित्र बनने में ही मनुष्यों को तकलीफ होती है। और पवित्र बनने में ही बहुत ग्रेड्स हैं। हरेक बच्चा समझ सकते हैं यह यह ग्रेड्स बढ़ते जाते हैं। अभी हम सम्पूर्ण नहीं बने हैं। कहां न कहांन कोई को किस प्रकार के कोई को किस प्रकार की डिफिकल्ट जरूर होती है। पवित्रता में है, योग में है। देह-अभिमान के बाद ही यह सभी डिफिकल्ट्स होते हैं। कोई में जास्ती कोई में कम डिफिकल्ट्स होते हैं। क्योंकि तुम हीरे बनते हो ना। अमूल्य रत्न बनते हो। जवाहरात में भी बहुत डिफेक्टेड्स होते हैं। किसम2 के हीरे होते हैं। उनको फिर मैगनेफ्राय ग्लास से देखा जाता है। तो जैसे बाप की आत्मा को समझा जाता है वैसे आत्माओं बच्चों को भी समझना होता है यह रत्न है ना। रत्न भी सभी नमस्ते लायक हैं। मोती, माणक, पुखराज आद2 सभी नमस्ते लायक हैं। इसलिए सभी वेराईटीज डाले जाते हैं। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार तो है ना। समझते हैं बेहद का बाप है अविनाशी ज्ञान रत्नों का जवाहरी वह एक ही है। जवाहरी भी उनको जरूर कहेंगे। ज्ञान रत्न देते हैं ना और फिर यहरथ भी जवाहरी। वही रत्नों के वेल्यु को जानते हैं। जवाहरों को बहुत अच्छी रीत मैगनेफ्राय ग्लास से देखना होता है इन में कहांतक डिफेक्टेड है। यह कौन सा रत्न है। कहां तक सर्विस एबुल है। दिल होती है रत्नों को देखने की। अच्छा रत्न होगा तो उनको बहुत ही प्यार से देखेंगे। यह बड़ा एक्सीलेन्ट है। इनको तो सोने की डबली में रखना चाहिए। पुखराज आद को सोने की डबली में नहीं रखा जाता। यह भी जैसे बेहद के रत्न बनते हैं। हरेक अपने दिल को जानते हैं। मैं किस प्रकार का रत्न हूं। हमारे में कोई डिफेक्ट तो नहीं। जैसे जवाहरों को अच्छी रीत देखा जाता है वैसे हरेक को अपने को देखना है मेरे में कौन सा डिफेक्ट है। वह होते हैं जड़-रत्न। जिनको चैतन्य मनुष्य को देखना पड़ता है। तुम तो हो हो चैतन्य रत्न। तो हर एक को अपन को ही देखना है हम कहां तक सब्जपुरी, निलम पुरी.... बने हैं। जैसे फूलों में भी कोई सदा गुलाब कोई गुलाब जैसुमन होते हैं। तुम्हारे में भी नम्बरवार है। हर एक अपन को अच्छी रीत जान सकते हैं। अपन को देखो हमने सारा दिन में क्या किया। बाबा को कितना याद किया। यह सभी बाबा ने कह दिया है गृहस्थ व्यवहार में रहते हुये बाप को याद करना है। बाप ने भक्त को भी कहा, यह एक दृष्टान्त दिया है। हम तो बच्चों को ही कहते हैं। यह तो समझते हैं भक्त कोई देवता बन नहीं सकते हैं। वह दृष्टान्त है। तुम जो बच्चे हो एक एक अपने को अच्छी रीत समझते हो। बाबा के साथ जिस बाप द्वारा हम हीरे बनते हैं उनके साथ हमारा लव कहां तक है। और कोई तरफ वृति तो नहीं जाती है। कहां तक मेरा देवी स्वभाव है। स्वभाव भी मनुष्य को बहुत सताता है। हरेक को तीसरा नेत्र मिला हुआ है उन से ही अपन को जांच करनी है कहां तक मैं बाप की याद में रहता हूं। कहां तक मेरी याद बाप को पहुंचती है। उनकी याद में रह रोमांच एकदम खड़ी हो जानी चाहिए। परन्तु बाप खुद कहते हैं माया के बिघ्न ऐसे हैं जो इतना खुशी में आने में नहीं देती है। बच्चे जानते हैं अभी हम सभी पुरुषार्थी हैं। रिजल्ट तो पिछाड़ी में ही निकलनी है। अपनी जांच करनी है। फिलो आद अभी तुम निकाल सकते हो। एकदम प्योर डायमन बनना है। अगर थोड़ा भी डिफेक्ट होगा तो समझ जावेंगे हमारी वेल्यु भी कम होगा। रत्न है ना। बाप तो समझाते हैं बच्चे सदैव पवित्र वेल्युएबुल हीरा बनना चाहिए। पुरुषार्थ कराने लिए भिन्न2 प्रकार से बाप समझाते हैं। (आज निष्टा के टाईम बीच में बाद-दादा सन्दली से उठकर सभा के बीच में चक्र लगाकर एक एक बच्चों से नयन मुलाकात कर रहे थे) बाबा आज निष्ठा में क्यों उठा? देखने लिए कि कौन2 सर्विस एबुल बच्चा है। क्योंकि कोई कहां, कोई कहां बैठे रहते हैं। तो बाबा ने उठकर एक एक को देखा इन में कौन सी गुण है, इनका कितना लव है। सभी बच्चे सम्मुख बैठे हुये हैं। तो सभी

बहुत प्यारे लगते हैं। परन्तु यह तो जरूर है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही प्यारे लगेंगे। बाप को तो मालूम है क्या2 किस में डिफेक्ट है। कोई न कोई डिफेक्ट है जरूर। क्योंकि जिस तन में बाप ने प्रवेशकिया है वह भी अपनी जांच करते हैं। यह दोनों बाप दादा इकट्ठे हैं ना। तो जितना2 जो औरों को सुख देते हैं, कोई को दुख नहीं देते हैं वह छिपा नहीं रह सकता। गुलाब, मोतियां कब छिपा नहीं रह सकेंगा। बाप सभी कुछ बच्चों को समझाकर फिर बच्चों को कहते हैं मामेकं याद करो तो तुम्हारी खाद निकल जावेगी। याद करने समय सारे दिन में जो कुछ किया है वह सभी देखना है। मेरे में क्या अवगुण है जो बाबा के दिल पर इतना नहीं चढ़ सकते हैं। दिल पर सो तख्त पर। तो बाप उठकर बच्चों को देखते हैं। हमारे तख्त के वासी कौन2 बनने वाले हैं। जब समय नजदीक आता है तो बच्चों को झट मालूम पड़ जाता है हम कहां तक पास होंगे। नापास होने वाले को तो पहले ही से मालूम पड़ जाते हैं कि हमारे मार्कस कम होंगी। तुम भी समझते हो हमको मार्कस तो मिलनी ही है। हम स्टुडन्टस हैं किसके? बाप के। जानते हो बाप दादा द्वारा पढ़ाते हैं। तो कितनी खुशी होनी चाहिए बच्चों को। बाबा हमको कितना प्यार करते हैं। कितना मीठा बाबा है। तकलीफ तो कोई देते नहीं सिर्फ कहते हैं इस चक्र को याद करो। पढ़ाई को जास्ती नहीं है। एमआबजेक्ट सामने खड़ा है। ऐसा हमें बनना चाहिए। दैवी गुणों की एमआबजेक्ट है। सन्यासी तो दैवी गुणों को जानते ही नहीं। सन्यासी कब उन्हों के आगे नहीं कहेंगे आप सर्वगुण सम्पन्न... हम नीचे पापी... बिल्कुल ही नहीं कहेंगे। तुम तो झट कहेंगे। सन्यासी क्या जाकर करेंगे। इसलिए सन्यासियों के लिए निषेध है। तुम बच्चे जानते हो हमको दैवी गुण धारण कर इन जैसा पवित्र बनना है। तब ही माला में पिरोये जावेंगे। बेहद का बाप हमको पढ़ाते हैं। खुशी होती है बाबा जरूर आप समान पवित्र, नालेज-फुल बनावेंगे। इसमें पवित्रता सुख-शान्ति सभी आ जाती है। अभी कोई भी परिपूर्ण नहीं बने हैं। अन्त में बनना है। इसके लिए पुरुषार्थ करना है। बाप को तो सभी प्यार करते हैं। बाबा कह कर तो दिल ही ठहर जानी चाहिए। बाप से वरसा कितना भारी मिलता है। सिवाय बाप के और कहां भी दिल नहीं जावेगी। बाप की याद ही बहुत सतानी चाहिए। बाबा, बाबा,। बाबा। बहुत ही प्यार से बाबा को याद करना होता है। राजा का बच्चा होगा तो उनको राजाई नशा रहता होगा ना। अभी तो राजाओं का मान न रहा है। जब ब्रिटीश गवर्मेन्ट थी तो इन्हों का बहुत ही मान था। सभी उनको सलाम करते थे सिवाय वायसराय के। बाकी सभी नकन करते थे राजाओं को। अभी उन्हों की क्या गति हो गई है। क्या उन्हों की बुधि में है। यह भी तुम जानते हो यह आकर राजाई पद लेंगे। नहीं। बाबा ने समझाया है मैं गरीब निवाज़ हूं। वह झट बाप को जान लेते हैं। समझते हैं यह सभी कुछ उनका है। उनके श्रीमत पर ही हम सभी कुछ करेंगे। उन्हों को तो अपने धन का नशा रहता है। इसलिए वह ऐसे कर न सके। इसलिए बाप कहते हैं मैं हूं ही गरीब निवाज़। बाकी हां बड़ों को उठाया जाता है क्योंकि बड़ों के कारण फिर गरीब भी झट उठावेंगे। देखेंगे इतने बड़े2 लोग इन्हों के पास जाते हैं तो हम भी क्यों न जावें। यहां तुम्हारे पास गरीब बहुत आवेंगे। वह विचारे तो डरते हैं। कोई अछूत आजाये, कोई गन्दा भीआ जाये तो हंगामा हो जाये। एकदिन अछूत भी तुम्हारे पास आवेंगे। जैसे प्रदर्शनी में फिमेल्स के लिए अलग टाईम रखा है ना। तो एक दिन अछूतों का भी दिन रखेंगे फिर उन्हों को तुम जब समझावेंगे तो बड़े ही खुश होंगे। एकदम चटक जावेंगे। उन्हों के लिए तुम खास टाईम रखेंगे। बच्चों के दिल में आता है हमको तो सभी का उधार करना है। सब से गरीब है अछूत। वह भल आये। वह भी तो पढ़कर एम०एल०ए० बनते हैं। तुम हो ईश्वरीय मिशन। तुमको सभी का उधार करना है। गायन भी है ना। भिलनी के बेर खाई... भिलनी अगर स्वच्छ हो जाये तो क्या उनके हाथ का खावेंगे नहीं। विवेक भी कहते हैं दान हमेशा गरीबों को किया जाता है। शाहुकार को नहीं। तुमको आगे चल यह सभी कुछ करना है। इस योग का बल जरूर चाहिए जिससे वह कोशिश में आये।

योगबल कम है। क्योंकि देहअभिमानी हैं। हरेक अपने दिल से पूछे हमको कहां तक बाप की याद है। कहां हम फंसते तो नहीं हैं। अभी टाईम तो बहुत है। ऐसी अवस्था चाहिए जो किसको भी देखने से चलायमान न हो। ********** यह हमारा भाई है। बाबा का फरमान है देहअभिमानी मत बनो। सभी को अपना भाई2 समझो। आत्मा जानती है हम भाई2 हैं। देह के सभी धर्म छोड़नी है। अन्त में अगर कुछ भी याद पड़ा तो दण्ड पड़ जावेगा। इतनी अपनी अवस्था मज़बूत बनानी है। और सर्विस भी करनी है। अन्दर में समझना है ऐसी अवस्था जब बनावेंगे तब ही यह पद मिल सकता है। बाप तो अच्छी रीत समझाते हैं। बहुत सर्विस रही हुई है। तुम्हारे भी बल होगा तो उनको कशिश होगी। अनेक जन्मों की कट लगी हुई है ना। यह ख्यालात तुम ब्राह्मण बच्चों को ही रखनी है। सभी के आत्माओं को पावन बनाना है। मनुष्य तो नहीं जानते हैं। यह भी तुम जानते हो सो भी नम्बरवारपुरुषार्थ अनुसार। बापसभी बातें समझाते रहते हैं। अपनी जांच करनी है। जैसे बाबा बेहद में खड़े हैं बच्चों को भी बेहद का ख्याल करना है। बाप का आत्माओं में कितना लव है। इतना दिन लव क्यों नहीं था। क्योंकि डिफेक्टेड थे। पतित आत्माओं को क्या लव करेंगे। अभी बाप सभी को पतित से पावन बनाने आये हैं। तो लवली जरूर बनना पड़ता है। बाबा तो है ही लवली। बच्चों को बहुत कशिश करते हैं। दिन प्रति दिन जितना पवित्र बनते जावेंगे तुमको बहुत कशिश होगी। बाबा में बहुत कशिश होगी। इतना खेंचेंगे तो तुम ठहर न सकेंगे। तुम्हारी अवस्था नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ऐसे आ जावेंगे। यहां बाप को देखते रहेंगे तो बस समझेंगे अभी जाकर बाबा से मिलें। ऐसे बाबा से फिर कब बिछुड़ेंगे नहीं। बाप को फिर कशिश होती है बच्चों की। इस बच्चे की तो कमाल है। बड़ी अच्छी सर्विस काते हैं। हां कुछ डिफेक्ट भी है। फिर भी अवस्था अनुसार, टाईम अनुसार बड़ी अच्छी ही सर्विस करते हैं। कोई को दुःख देने जैसे आदमी देखने में नहीं आते हैं। बिमारी आदि होती है तो वह है कर्म-भोग। खुद भी समझते हैं जब तक यहां हैं कुछ न कुछ होता रहेगा। भल सह रहा है। फिर भी कर्मभोग तो पिछाड़ी तक भोगना ही है। ऐसे नहीं कि मैं इन में आशीर्वाद करूंगा। इनको भी अपना पुरुषार्थ करना है। हाथ रख दिया है इसके दो पैसा दे देंगे।

बहुत बान्धेलियां कैसे2 आती है; कैसे युक्ति से छूट कर आती है। उनका जितना लव रहता है और कोई का उतना नहीं। बहुतों का लव बिल्कुल नहीं हैं। उन बान्धेलियों के लव से तो किसके भी लव से भेंट नहीं कर सकेंगे। बान्धेलियों का योग भी कोई कम नहीं समझना। बहुत याद में रोती है। बाबा ओ बाबा कब हम आप से मिलेंगे। बाबा, विश्व का मालिक बनाने वाले बाबा आप से हम कैसे मिलेंगे। ऐसी2 बहुत बान्धेलियां हैं जो प्रेम की आंसू बहाती रहती है। वह उनके दुःख के आंसु नहीं हैं। वह आंसु प्यार के मोती बन जाते हैं। तो बान्धेलियों का योग कोई कम थोड़े ही है। याद में बहुत तरफ्ती है। दुःख मिटाने वाले बाबा। बाप कहते हैं जितना समय तुम याद में रहेंगे सर्विस भी करेंगे। भल कोई बन्धन में रहते हैं खुद सर्विस नहीं कर सकते हैं परन्तु याद का भी बहुत बल मिलता है। याद में ही सभी कुछ समाया हुआ है। तरफ्ती रहती है। बाबा कब मौका मिलेगा जो हम आप से मिलेंगे। कितना याद में रहते हैं। आगे चल दिन प्रति दिन तुमको जोर से खेंच होती रहेगी। स्नान करते, काम-काज करते याद में ही रहेंगे। बाबा कब वह दिन आवेगा। जो बन्धन खलास होंगे। बिचारी पूछती रहती है। बाब यह हमको बहुत तंग करते हैं। क्या करें। बच्चों को मार सकते हैं? पाप तो नहीं होगा। बाप कहते हैं आकल के बच्चे तो बिच्छू टिण्डन ऐसे हैं जो बात मत पूछो। किसको पति से दुःख होता है तो अन्दर में सोचते हैं कहां यह बन्धन टूट जाये तो हम बाब से मिलें। बाबा बहुत कड़ा बन्धन है। क्या करें। पति का बन्धन कब छूटेगा। बस बाबा, बाबा, बाबा, ही करती रहती है। उनकी कशिश तो आती है ना। क्या करें। सरकार के कायदे भी बहुत हैं। बिघ्न तो बहुत डालते हैं ना। इसलिए बुलाया जाता है बड़े2 आदमियों को। फिर समय पर कबउन से काम लेना होता है। बिचारी अबलाएंकितनी मार

खाती है। कितना सहन करती है। तुम ने शुरू में इतनी मारें नहीं खाई है जितनी कि अभी खाती हैं। तुमको कर के दसतालगाया। चमाट मारी होंगी। बस ना। ऐसे तो नहीं कोई की हड्डी तोड़ डाली। नहीं। अभी तो क्या2 कर देते हैं। शुरू से लेकर विकार को बात पर ही हंगामा होता आया है। यह भी तुम समझते हो बाबा ने कैसी युक्ति रची सभी को कहा चिट्ठी लेकर आओ। ऐसे तो कब गुरु लोग नहीं कहते हैं। अभी तुमको ज्ञान मिला है। वह समझते हैं यह लोग भक्ति को मानते ही नहीं हैं। शास्त्रों को मानते ही नहीं। तब ही बाबा ने समझाया था तुमको कहे शास्त्रों को नहीं मानते हो? बोलो तुम तो मूर्ख हो। जितना हम शास्त्र पढ़े हैं उतना फिर और कोई ने नहीं पढ़ी होगी। हमने जितना भक्ति की है उतनी कोई ने नहीं की होगी। हम एक्युरेट टाईम बताते हैं। आज से 2500 वर्ष हुये हमको भक्ति करते। हमने जन्म-जन्मान्तर शास्त्र आद पढ़ी है। तुम ने भी इतनी भक्ति नहीं की होगी। हम तो सभी को जानते हैं। हम तुम्हारे जन्मों को भी जानते हैं। सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त को भी जानते हैं। ऋषि-मुनि आद कुछ नहीं जानते थे। वह भी नास्तिक थे। बाप के भी वायोग्राफी को जानते हैं। इतना नशा रहना चाहिए। दिमाग से बात करनी चाहिए। पहले तो अपनी अवस्था को ही देखना है। कोई छी छी खाद तो हमारे में नहीं हैं। हरेक समझते तो हैं ना। 6-8 प्रकार का विकार होता है। आंखों का भी कितना धोखा होता है। =बुधि बूढ़े भी कहते हैं हम स्त्री को देखता हूं तो बुधि चलायमान होती है। बाप कहते हैं तुम देहअभिमान में हो तब ही चलायमान होते हो। इसमें पाप नहीं है। परन्तु यह भी न होना चाहिए। तुम कर्म ईन्द्रियों से नहीं करते हो तो पाप नहीं हैं। कर्म ईन्द्रियों से ऐसा कुछ काम किया तो पाप बन पड़ेगा। वास्तव में तुमको देखना भी है आत्मा को। और सभी बातें उड़ जाये। हम जानते हैं कि हम सभी आत्मा भाई2 हैं। तुम बच्चों को भी समझाया जाता है। सभी भाई2 हैं। हमारा वह बाबा है। यह कौन सा बाबा है। आत्माओं का बाबा है या देह का बाबा है? यह है आत्माओं का बाप। जो हमारा बाप भी है, टीचर भी बना है गुरु भी बना है। वन्डर है ना। लौकिक सम्बन्ध में बाप टीचर गुरु सब अलग2 होते हैं। टीचर्स भी तुम कितने करते हो। वह भी व्यभिचारी हो गया ना। यहां तो एक ही है बाप एक ही अविनाशी टीचर है। नहीं तो बुधि तीनों तरफ जाती है। यहां तो बुधि में एक ही याद रखनी है। यह तो समझते हैं नम्बरवार है। कोई की बुधि में अच्छी रीत बैठता है। कोई की बुधि में बिल्कुल बैठता ही नहीं।

तुम बच्चे अभी पुरानी दुनिया से नई दुनिया में जाने कर पुरुषार्थ करते हो। जानते हो फूलों का गार्डन स्थापन होना ही है। बाकी उसमें उंच पद पाने लिए पुरुषार्थ करना है। बहुत बेहद का पुरुषार्थ करना है। कहते हो हम नर से नारायण बनेंगे तो बस एक बाप को ही याद करते रहो। बस बाबा ओ बाबा मीठे बाबा। आप से हमको वरसा मिलता है। अभी आप आये हो हमको ले जाने लिए अभी हमारा पार्ट पूरा होता है। सभी चले जावेंगे मुक्तिधाम। बाकी जो राजयोग सीखेंगे वही राजाई में जावेंगे। ओम।

बाप कहते हैं देहली में खूब घेराव डालो। क्योंकि देहली राजधानी है ना। हमेशा राजधानी पर ही घेराव दिया जाता है। तुम देहली पर घेराव डालो। बड़े2 म्युजियम खोलो। सिर्फ मकान का फैसला करो। बाबा को लिखो बाबा कुंआ से पैसा भेज दो। काम तो तुम बच्चों को करना है। देहली कैपीटल को हड़प किया तो सभी हड़प आ जावेंगे। मकान रायल लो। 4-6-8 म्युजियम खोलो। बाबा मना नहीं करते हैं। खोलो ऐसे भभके से। भल कोई भी मदद न देवे। बाबा कहते हैं मैं सावलशाह हूं। कल्प पहले भी बना था। यह सभी ड्रामा मैनूंध है। तुम बिल्कुल बेफिक्र रहो। घेराव डालते रहो। होगा सब ड्रामा प्लैन अनुसार। फर्स्ट क्लास सेन्टर खोलो किराया पर। फिर बहुत ढेर तुम्हारे पास आवेंगे। पूछेंगे खर्चा कैसे चलता है। कहां से आता है। और जो बादशाही करेंगे वही खर्चा निकालेंगे ना। जो ब्राह्मण देवता बनने वाले हैं खर्चा भी वही करेंगे। शिव बाबा तो बादशाह नहीं बनते हैं। हम बनते हैं ऐसा भी हम खर्चा करते हैं। ब्राह्मण ही देवता बनते हैं खर्चा भी तो वही करेंगे ना। अच्छा ओम।